

साहित्यिक छत्तीसगढ़ की वितरण प्रणाली: उसका देश पर प्रभाव

कनिका रॉय, शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, ओ पी जे एस विश्विधालय, चूरू (राजस्थान)

सारांश

छत्तीसगढ़ की साहित्यिक परंपरा भारतीय लोकजीवन, संस्कृति, सामाजिक चेतना और क्षेत्रीय अस्मिता की समृद्ध अभिव्यक्ति है। यहाँ की साहित्यिक रचनाओं में लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों, जनजातीय जीवन, प्रकृति तथा सामाजिक सरोकारों का व्यापक चित्रण मिलता है। साहित्य के सृजन के साथ-साथ उसका वितरण और पाठकों तक पहुँचना भी साहित्यिक संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। छत्तीसगढ़ में साहित्य के वितरण की प्रक्रिया पारंपरिक माध्यमों से लेकर आधुनिक मुद्रित एवं डिजिटल माध्यमों तक विस्तृत हुई है। पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ, साहित्यिक गोष्ठियाँ, पुस्तकालय, शैक्षणिक संस्थाएँ, साहित्यिक मंच तथा सामाजिक और डिजिटल मीडिया इसके प्रमुख माध्यम हैं। साहित्यिक छत्तीसगढ़ की वितरण प्रणाली ने स्थानीय साहित्य को क्षेत्रीय सीमाओं से बाहर पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके माध्यम से छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति, जनजातीय परंपराएँ, सामाजिक जीवन और भाषाई विविधता देश के विभिन्न हिस्सों तक पहुँची हैं। इससे राष्ट्रीय स्तर पर क्षेत्रीय साहित्य के प्रति रुचि और संवाद को बढ़ावा मिला है। साथ ही, हिंदी साहित्य में छत्तीसगढ़ी अनुभवों और लोकचेतना की उपस्थिति अधिक सशक्त हुई है। डिजिटल माध्यमों ने इस वितरण प्रक्रिया को और व्यापक बनाकर युवा पीढ़ी तथा देश के अन्य क्षेत्रों के पाठकों को इससे जोड़ा है। इस प्रकार, साहित्यिक छत्तीसगढ़ की वितरण प्रणाली सांस्कृतिक आदान-प्रदान, राष्ट्रीय एकता और विविधता में एकता की भावना को मजबूत करने में सहायक रही है।

प्रमुख शब्द: साहित्यिक छत्तीसगढ़, वितरण प्रणाली, छत्तीसगढ़ी साहित्य, लोकसाहित्य, जनजातीय साहित्य, सांस्कृतिक चेतना, साहित्यिक प्रसार, डिजिटल माध्यम, राष्ट्रीय प्रभाव, भाषाई विविधता।

